Daily Gospel Reflections in Hindi

03 July 2019

योहन 20:24-29

MY LORD AND MY GOD

''मेरे प्रभु, मेरे ईश्वर'' पुनःरुत्थित प्रभु के दर्शन पाकर थोमस ने यह कहा। इस घटना का विवरण केवल संत योहन के सुसमाचार में दिया गया है। जाहिर सी बात है, संत योहन का उद्देश्य ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करना नहीं, बल्कि उस विवरण से एक नई शिक्षा (New Theological Teaching) प्रस्तुत करना है। और वह नई शिक्षा है– प्रभु येसु को प्रभु और ईश्वर के रूप में पहचानना। मिस्र की गुलामी से बचाकर प्रभु पहली बार यहूदियों के इतिहास में दखल किया, और सीनाई पहाड़ी पर प्रभु ने यहूदियों के नेता मूसा को दस आज्ञाएं दी। दस आज्ञाओं का पहला वाक्य था– ''मैं प्रभु, तुम्हारा ईश्वर हूँ''। (Ex. 20:2) यह वाक्य बाद में ईश्वर का पहचान बना। यही वाक्य बाईबल के कई अन्य भागों में भी देखा जा सकता है (Lev. 18:2,19:31, Is. 41:13, 48:17, Joel. 2:26)। संत योहन यह सिखाना चाहते है कि ईश्वर, जिन्होंने यहूदियों को मिस्र की गुलामी से निकाल लाये, लाल सागर को चीरकर रास्ता बनायें, वह ईश्वर और पुनःरुत्थित प्रभु येसु दोनों अलग नहीं– एक ही ईश्वर है। जो मुझे देखता है वह पिता को देखता है, प्रभु ने कहा है (Jn. 14:9, 12:45)। पुनःरुत्थित प्रभु में सृष्टिकर्ता ईश्वर को, जिसने यहूदियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ा लाये, पहचानना ही आज के सुसमाचार पाठ की चुनौती है।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019